अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 469–474
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.044

भारतीय ज्ञान परम्पराः वेदों में निहित आयुर्वेद विज्ञान

डॉ0 कुसुम कुमारी*

प्राप्तिः 27 मार्च 2026 / संशोधितः 30 मार्च 2026 / स्वीकृतः 31 मार्च 2026
प्रकाशितः 31 मार्च 2026 जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध परम्पराओं में से एक है, जिसमें जीवन के विविध आयामों– दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, योग एवं आध्यात्म, का समन्वित स्वरूप मिलता है। इस परम्परा में आयुर्वेद को जीवन–विज्ञान के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य वेदों में निहित आयुर्वेदिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित करना है कि प्राचीन वैदिक साहित्य में स्वास्थ्य, दीर्घायु, रोग–निवारण तथा समग्र जीवन–शैली से सम्बन्धित वैज्ञानिक दृष्टिकोण विद्यमान है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद में चिकित्सा, औषधि, त्रिदोष सिद्धान्त, शरीर रचना तथा स्वास्थ्य संरक्षण से सम्बन्धित अनेक सन्दर्भ उपलब्ध होते हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति न होकर समग्र जीवन–शास्त्र है, जिसका उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा तथा रोगी के रोग का शमन करना है।

प्रमुख कूटशब्दः भारतीय ज्ञान परम्परा, निरोगता, दीर्घायुष्य, तेज, ज्योति, बल, शरीरांग, त्रिदोषवाद।

भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय सभ्यता की नींव है जो हजारों वर्षों से विकसित हो रही है। यह परम्परा न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन में प्रभावी रही है। भारतीय ज्ञान–परम्परा में दर्शन, गणित, चिकित्सा, विज्ञान, साहित्य, कला, आयुर्वेद और योग का समावेश है। उसमें भी आयुर्वेद जीवन का मुख्यतम अंग है। जन्म से लेकर मृत्यु तक आयुर्वेद की आवश्यकता होती है। स्वस्थ रहने की पद्धति का उपदेष्टा आयुर्वेद है। आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, जो शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्य पर आधारित है। इसमें त्रिदोष सिद्धान्त (वात, पित्त, कफ)

---

*612/P, हनुमन्तपुरम् द्वितीय, फैजुल्लागंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश–226020
ई-मेल: amarnathkusum1980@gmail.com

का महत्व है, जो शरीर की सेहत को बनाये रखने के लिए संतुलन की आवश्यकता को दर्शाता है।

इस शोध पत्र को लिखने का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा में विद्यमान वेद एवं आयुर्वेद विज्ञान के प्रति जन–सामान्य की रुचि को जागृत करना है।

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व में प्राचीनतम है, उस परम्परा में भी वेदों में परिगणित प्रथम ऋग्वेद को यूनेस्को (UNESCO) संस्था के द्वारा विश्व की सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ घोषित किया गया है। वेद आर्य जाति के प्राण में मानव मात्र के लिए प्रकाश स्तंभ और शक्ति के स्रोत हैं। विश्व को संस्कृति का ज्ञान देने का श्रेय वेदों को है। वेद ही विश्वबन्धुत्व, विश्व कल्याण और विश्व शान्ति के प्रथम उद्घोषक है। वेद ही मानव मात्र के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त करते हुए सुख और शान्ति की स्थापना कर सकते हैं। वही अज्ञान, निराशा, अनाचार और आधि, व्याधि से मुक्त करके जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। वेदों के विषय में मनु का यह कथन सारगर्भित है कि–

यः कष्चिद्स्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।

सः सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः।।[1]

अर्थात् वेदों में सभी विद्याओं के सूत्र विद्यमान हैं। वेदों में जहां धर्म, आचार शिक्षा, नीतिशिक्षा, सामाजिक जीवन, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद आदि से सम्बद्ध पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, वहीं विज्ञान के विविध अंगों से सम्बद्ध सामग्री भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। वेदों में भौतिकी, रसायन विज्ञान वनस्पतिशास्त्र, जन्तुविज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, गतिणशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वृद्धि विज्ञान पर्यावरण एवं भूगर्भ विज्ञान से सम्बद्ध सामग्री बहुलता से प्राण्य है।

आयुर्वेद रूपी इस वेदशास्त्र का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा उसके रोगग्रस्त शरीर को रोगमुक्त करना है। आयुर्वेद मात्र चिकित्सा विज्ञान ही नहीं है अपितु यह जीवन का विज्ञान है, जो प्रारम्भ से ही केवल मानव को ही नहीं देवताओं को भी आरोग्य लाभ प्रदान करता आ रहा है।

ऋग्वेद और आयुर्वेद

ऋग्वेद में अग्निचिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सूर्यचिकित्सा, शल्यचिकित्सा, हस्तस्पर्शचिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, विष चिकित्सा, कृमिनाशन, दीर्घायुष्यतेज, ओज नीरोगय वशीकरण, कुस्वप्ननाशन, त्रिदोषवाद आदि का विशिष्ट वर्णन यत्र–तत्र प्राप्त होता है। इसमें त्रिदोष से सम्बन्धित मन्त्र इस प्रकार है–

त्रिर्नो अष्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरू दत्तमद्भ्यः।

ओमानं शयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती।[2]

अर्थात् हे शुभ कार्यपालक अश्विनीकुमारो ! आपने तीन बार हमें (धुस्थानीय) दिव्य औषधियों, तीन बार पार्थिव ओषधियों तथा तीन बार जल ओषधियां प्रदान की हैं। हमारे पुत्र को श्रेष्ठ सुख एवं संरक्षण दिया है, और तीन धातुओं (वात, पित्त, कफ) से मिलने वाला सुख आरोग्य एवं ऐश्वर्य भी प्रदान किया है।

यजुर्वेद और आयुर्वेद

यजुर्वेद में वैद्य के गुण कर्म विभिन्न औषधियों के नाम आदि, शरीर के विभिन्न अंग, चिकित्सा दीर्घायुष्य, नीरोगता, तेज, वर्चस्, बल, अग्नि और जल के गुण कर्म का वर्णन उपलब्ध होता है यथा–

तेज, वर्चस-

अजस्रं धर्ममीमहे,[3]

हम सदा तेज चाहते हैं।

अस्मे वर्चः सुवीयम्।[4]

देव हमे तेज और पराक्रम दे।

तेजोऽसि तेजोमहि धोहि।।[5]

सामवेद और आयुर्वेद

सामवेद में भी यत्र–तत्र आयुर्वेद विषयक सामग्री प्राप्त होता है, उसमें आयुर्वेद से सम्बन्धित मन्त्रों में वैद्य, चिकित्सा, दीर्घायुष्य, तेज, ज्योति, बल, शान्ति आदि का वर्णन प्राप्त होता है।

भिषज्/चिकित्सा

आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत्।।[6]

तेज/ओज

अस्मे वर्चाः सुवीर्यम्।[7] **सामवेद 152**

अग्नि हमें तेज और महान शक्ति दे।

क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजम्।[8]

हे इन्द्र ! हमें ज्ञान, तेज और स्थायी शक्ति दो।

अथर्ववेद और आयुर्वेद

आयुर्वेद की दृष्टि से अथर्ववेद अत्यन्त महनीय ग्रन्थ है। इसमें आयुर्वेद के प्रायः सभी अंगों और उपांगो का विस्तृत वर्णन मिलता है। अथर्ववेद आयुर्वेद का मूल आधार है। इसमें आयुर्वेद से सम्बद्ध निम्नलिखित विषयों का वर्णन प्राप्त होता है भिषज् या वैद्य के गुण, कर्म, भैषज्य, शरीरांग, दीर्घायुष्य, नीरोगता तेज वशीकरण, बाजीकरण विभिन्न मणियां, विविध औषधियों के नाम और गुण पशु चिकित्सा, शल्य चिकित्सा आदि।

आयुर्वेद की परिभाषा

आयुर्वेद में विद् धातु है, जिसके अनेक अर्थ होने से आयुर्वेद की निरूक्तियां भी कई प्रकार की हो जाती हैं–

सतायां विद्यते ज्ञाने वेति विन्ते विचारणे।

विन्दते विन्दति प्राप्तो शयन्लृकृश्रम् शाष्विद् क्रमाद।। (सिद्धान्तकौमुदी)

आयु का अर्थ है जीवित उसके साथ विद् ज्ञाने धातु से या विद् लाभे धातु से आयुर्वेद शब्द बनता है, अर्थात् इसके द्वारा आयु का ज्ञान होता है या आयु की प्राप्ति होती है। इसलिए इसे आयुर्वेद कहते हैं। इस प्रकार दीर्घ जीवन के बतलाने वाले तथा उपायों के द्वारा उसे प्राप्त करने वाले अविनाशी शास्त्र को आयुर्वेद कहते हैं।

आचार्य चरक के अनुसार—

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।

मान´च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।[9]

आयुर्वेद शास्त्र उसे कहते हैं जिसमें हित, अहित, सुख और दुःख आयु के लिए हित और अहित (पथ्यापथ्य) उस आयु का मान (प्रमाण और अप्रमाण) तथा आयु का स्वरूप बताया गया है, जो आयु का ज्ञान कराता हो यही आयुर्वेद है। यह आयुर्वेद अपने लक्षणों द्वारा सुख—दुःख, हित—अहित, प्रमाण—अप्रमाण द्वारा आयु का उपदेश करता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साधनों के लिए निरोग रहना परमावश्क है। यदि कभी रोग हो जाये तो उस रोग का दूरीकरण भी एकान्ततः लक्ष्य चिकित्सा विज्ञान का है—

धर्मार्थ—काम— मोक्षाणामारोग्यं मृतमुत्तमम्।

रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयसो जीवितस्य च।।[10] **चरक सूत्र**

बल और शक्ति

चारों वेदों में अनेक मंत्रों में शारीरिक शक्ति की प्रार्थना की गई है, और उसके साधनों का ग्रन्थों में सुव्यवस्थित वर्णन किया गया है। भोजन के विषय में सुश्रुत ने कुछ उपयोगी नियम बताये हैं— 1. भूख होने पर ही भोजन करें, 2. ठीक मात्रा में भोजन करें, 3. खूब चबाकर भोजन करें, 4. निश्चित समय पर भोजन करें, 5. हल्का पौष्टिक सरस एवं गर्म भोजन करें

काले सात्म्यं लघु स्निग्धं क्षिप्रमुष्णं द्रवोतरम्।

बुभुक्षितोऽन्नमश्रीयाद् मात्रावद् विदितागमः।।[11]

ऋग्वेद में बल और शक्ति की प्रार्थना के साथ ही उसके साधनों का भी उल्लेख है। यथा—

1. प्रातः काल उठना।[12]
2. प्राण अपान शक्ति को बढ़ाना।[13]
3. घृत का सेवन करना।[14]
4. तेजस्विता के लिए शक्ति वृद्धि [15]
5. जल और दूध का सेवन [16]

यजुर्वेद के अनेक मंत्रों में शक्ति की प्रार्थना है और कुछ उपायों का भी वर्णन है—

1. शुभ अन्न से शक्ति [17]
2. गोदुग्धादि से ऊर्जा [18]

3.
4. घृत सेवन–घी से शरीर पुष्ट करें।[19]
5. संयम और वीर्य रक्षा[20]
6. ज्ञानपूर्वक कर्म करना, वाग्देवी प्राणशक्ति के द्वारा शक्ति देती है,[21]

उपसंहार

भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय सभ्यता की नींव है, उसमें भी मुख्यभूत वेदों का पाश्चात्य जगत एवं भारत में अपूर्व सम्मान है। इसमें सभी विद्याओं का समावेश है। यथा– ज्योतिष, साहित्य, व्याकरण, छन्द और आयुर्वेद आदि। इन्हें ज्ञान–विज्ञान का निधान कहा गया है। आरम्भिक आयुर्वेद की स्रोतस्विनी यही से प्रवाहित हुई थी। आयुर्वेद जीवन का अंग है। जन्म से लेकर मृत्यु तक आयुर्वेद की आवश्कयता होती है। स्वस्थ रहने की पद्धति का उपदेष्टा आयुर्वेद है। इस आयुर्वेद शास्त्र की विशाल परम्परा में महर्षि भरद्वाज, अत्रि, वसिष्ठ, धन्वन्तरि आदि चिकित्सा विज्ञान के शाखाओं ने यही से शिक्षा लेकर बड़ी से बड़ी संहिताओं का निर्माण किया था, और इस परम्परा को अनवरत रूप से आगे बढ़ाने का कार्य किया। इस प्रकार हम निःसंकोच भाव से यह कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान–परम्परा में समाहित वैदिक युग में चिकित्सा विज्ञान आधुनिक युग के चिकित्सा विज्ञान की तरह विकसित था। इस प्रकार वैदिक युग को चिकित्सा विज्ञान का उत्कर्ष काल यदि कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति 2/7
2. ऋग्वेद 1/34/6
3. यजुर्वेद 26/6
4. यजुर्वेद 8/38
5. यजुर्वेद 20/23 एवं 38/25
6. सामवेद 1112
7. सामवेद 152
8. सामवेद 625
9. चरक संहिता–सूत्र 1/411
10. चरक सूत्र
11. सुश्रुत सूत्र 46/471
12. ऋग्वेद 1/48/12
13. ऋग्वेद 8/35/10
14. ऋग्वेद 1056.5
15. ऋग्वेद 6.1064
16. ऋग् 1/61/18
17. यजेुर्वेद 3/20
18. यजुर्वेद 3/20
19. यजुर्वेद 12/44
20. यजुर्वेद 16/76, 21/55
21. यजु0 20/80

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी, कपिलदेव, वेदों में आयुर्वेद, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, भदोही।
2. चरक, चरक संहिता, चौखम्बा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. सुश्रुत, सुश्रुत संहिता, चौखम्बा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. द्विवेदी, कपिलदेव, वेदों में विज्ञान, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, भदोही।
5. ऋग्वेद संहिता, सं. सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, वाराणसी।
6. यजुर्वेद संहिता, सं. सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, वाराणसी।
7. अथर्ववेद संहिता, सं. सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, वाराणसी।
8. मनुस्मृति, सं. भगवान दत्त शास्त्री, उदयाचल प्रेस, हावड़ा।
9. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, सष्टदश खण्ड, आयुर्वेद का इतिहास सम्पादक, डॉ0 रमानाथ द्विवेदी, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ
10. द्विवेदी, कपिलदेव, ऋग्वेद सुभाषितावली, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणसी।
11. द्विवेदी, कपिलदेव, यजुर्वेद सुभाषितावली, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणसी।
12. द्विवेदी, कपिलदेव, सामवेद सुभाषितावली, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणसी।
13. द्विवेदी, कपिलदेव, अथर्ववेद सुभाषितावली, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर, वाराणसी।

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).